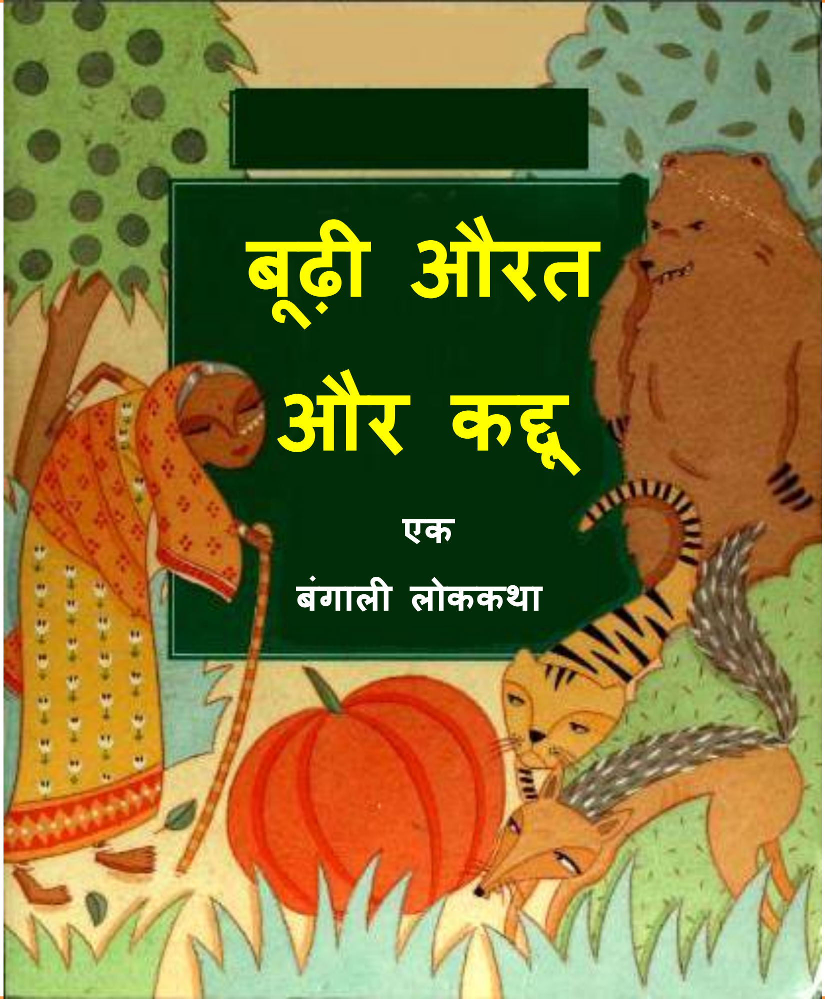

[redacted]

बूढ़ी औरत और कद्दू

एक
बंगाली लोककथा

बूढ़ी औरत और कद्दू

बहुत पहले एक बहुत बूढ़ी औरत थी.
उसकी कमर झुक कर दोहरी हो गई थी.
वो एक डंडे का सहारा लेकर चलती थी.
चलते समय उसका सिर बाएं-दाएँ हिलता था.

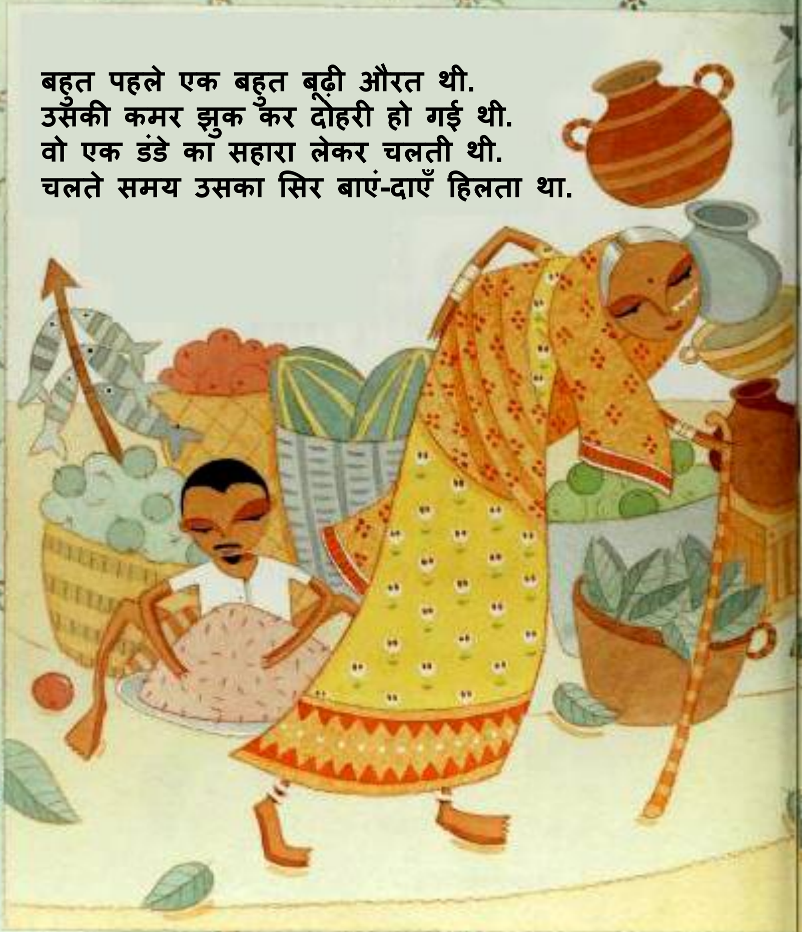

एक दिन बुढ़िया अपनी पोती के घर गई. वो अपने घर से बाज़ार गई, वहां से वो नदी पार करके एक गहरे, घने जंगल में घुसी.

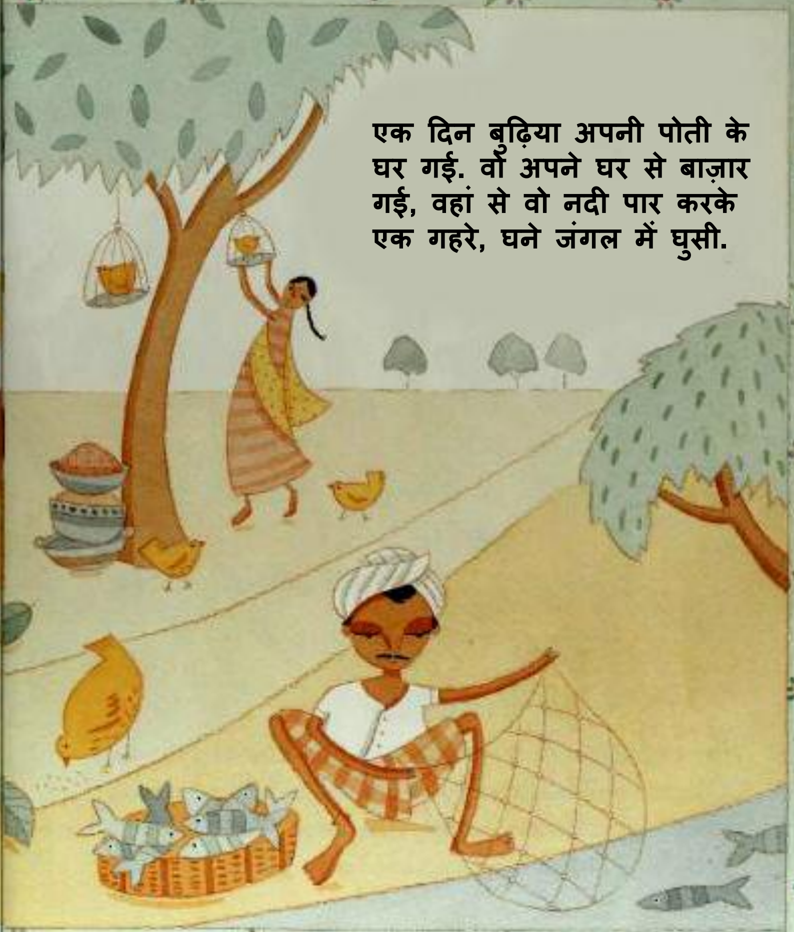

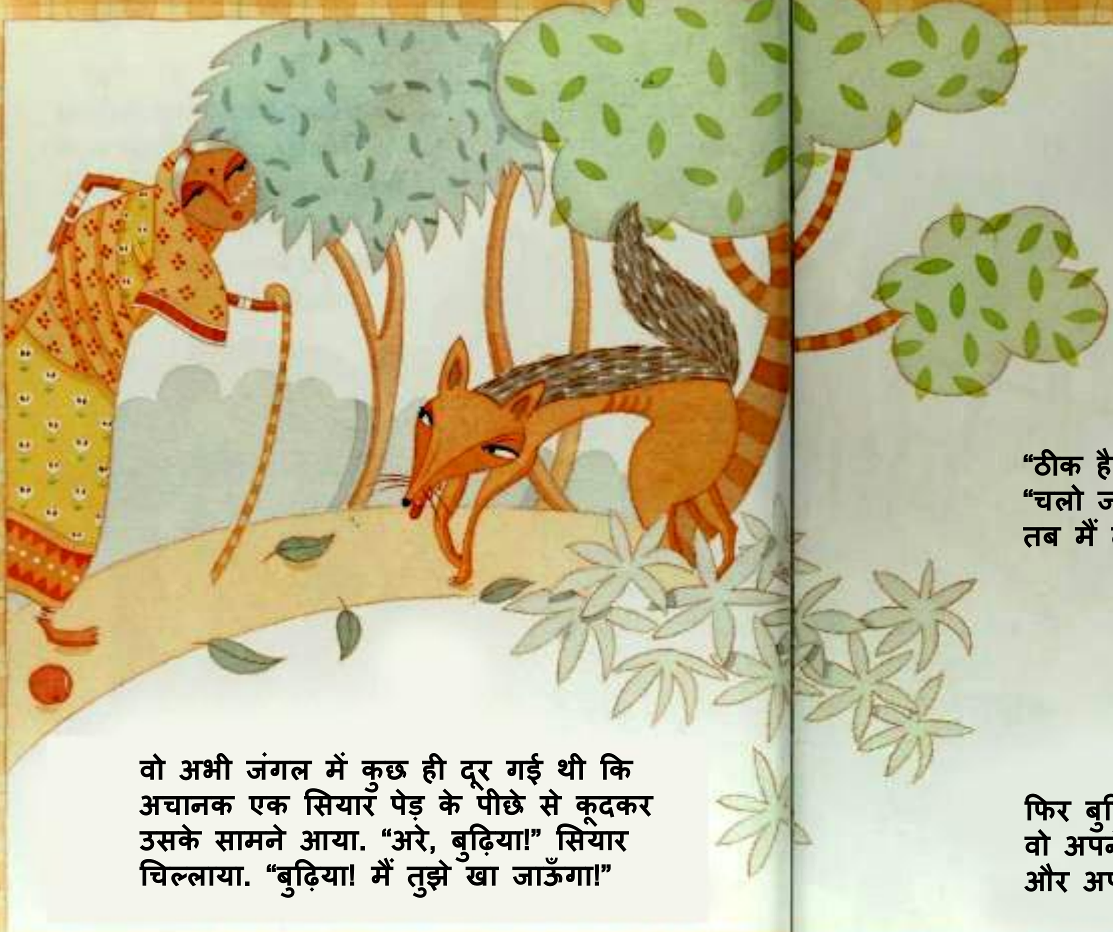

वो अभी जंगल में कुछ ही दूर गई थी कि अचानक एक सियार पेड़ के पीछे से कूदकर उसके सामने आया. “अरे, बुढ़िया!” सियार चिल्लाया. “बुढ़िया! मैं तुझे खा जाऊँगा!”

“रुको!” बुढ़िया ने कहा. “अगर तुम मुझे अभी खाओगे तो फिर तुम्हें सिर्फ चमड़ी और हड्डियाँ ही मिलेंगी? मैं अपनी पोती के घर जा रही हूँ. वहां से मैं खा-पीकर मोटी बनकर आऊंगी.”

“ठीक है,” सियार ने कहा.
“चलो जाओ. जब तुम मोटी बनकर आओगी तब मैं तुम्हें खाऊँगा.”

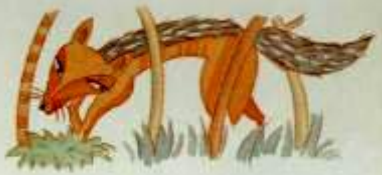

फिर बुढ़िया अपने रास्ते चलती गई. वो अपने डंडे का सहारा लेकर आगे बढ़ी और अपना सिर बाएं-दाएं हिलाती रही.

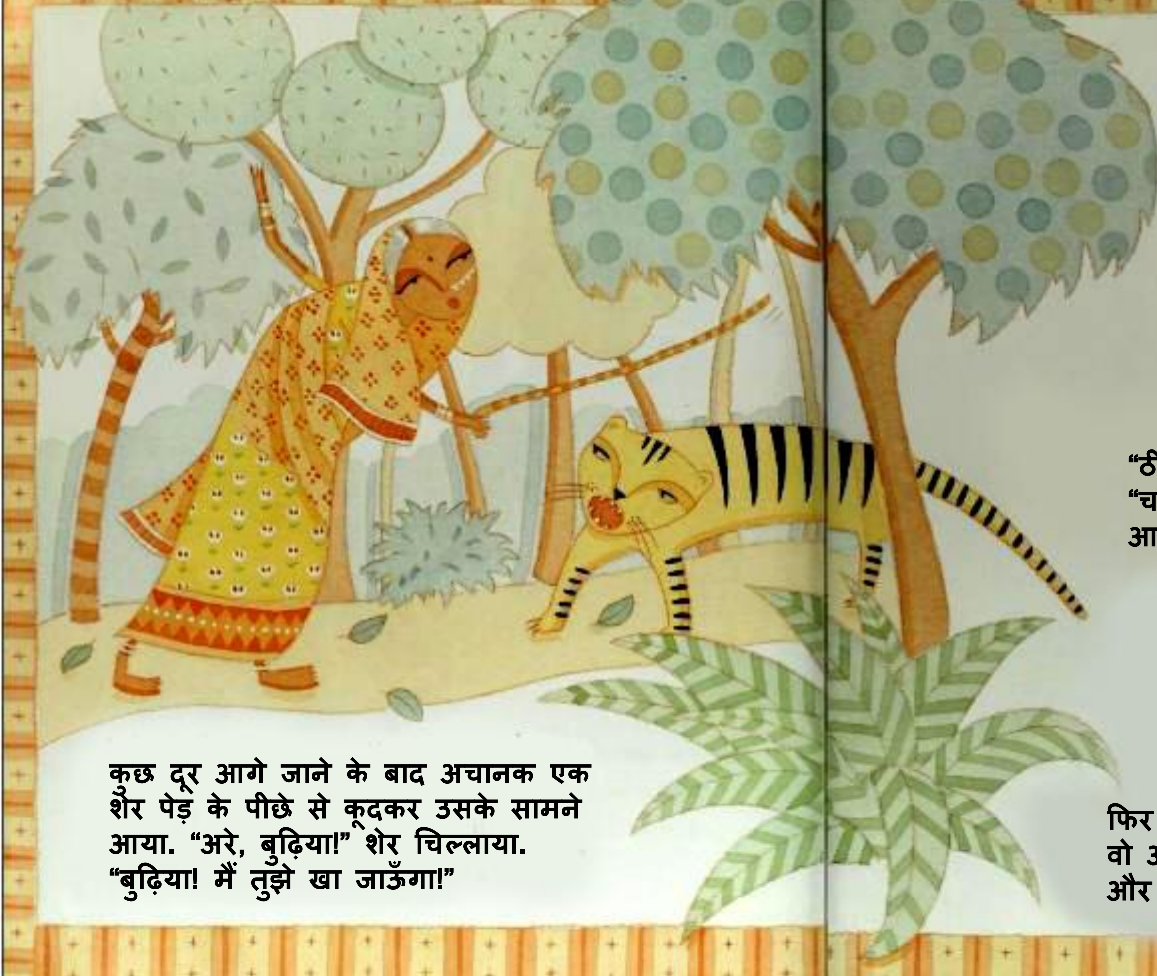

कुछ दूर आगे जाने के बाद अचानक एक शेर पेड़ के पीछे से कूदकर उसके सामने आया. “अरे, बुढ़िया!” शेर चिल्लाया. “बुढ़िया! मैं तुझे खा जाऊँगा!”

“रुको!” बुढ़िया ने कहा. “अगर तुम मुझे अभी खाओगे तो फिर तुम्हें सिर्फ चमड़ी और हड्डियाँ ही मिलेंगी? मैं अपनी पोती के घर जा रही हूँ. वहां से मैं खा-पीकर मोटी बनकर आऊंगी.”

“ठीक है,” शेर ने कहा. “चलो जाओ. जब तुम मोटी बनकर आओगी तब मैं तुम्हें खाऊँगा.”

फिर बुढ़िया अपने रास्ते चलती गई. वो अपने डंडे का सहारा लेकर आगे बढ़ी और अपना सिर बाएं-दाएं हिलाती रही.

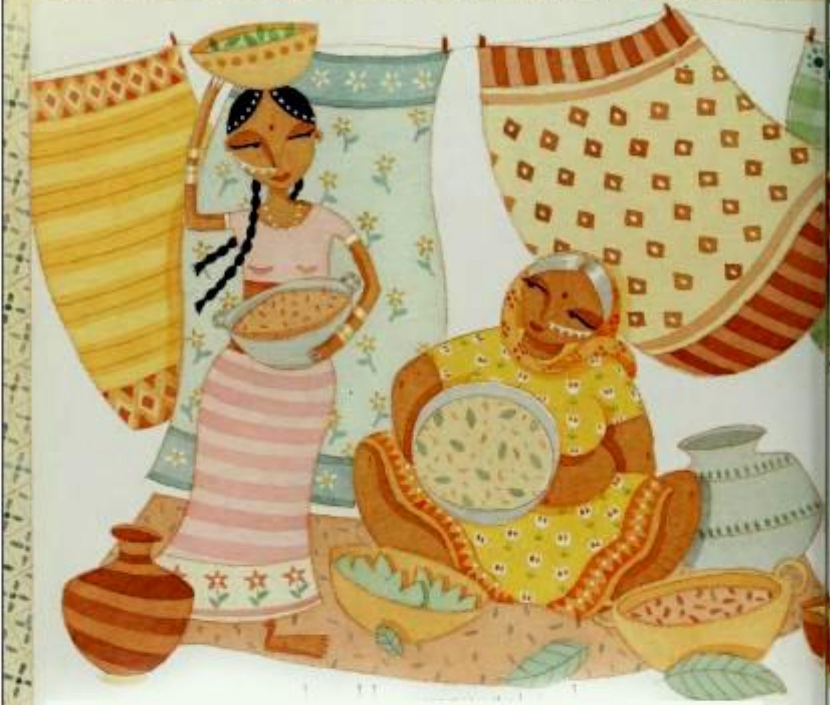

अपनी पोती के घर पहुँचने के बाद बुढ़िया ने दाल और दही खाया, उसने दही और दाल खाई. उसने पेट भर का दाल और दही खाया. फिर वो कितनी मोटी हुई? अगर वो कुछ और खाती तो शायद उसका पेट ही फट जाता!

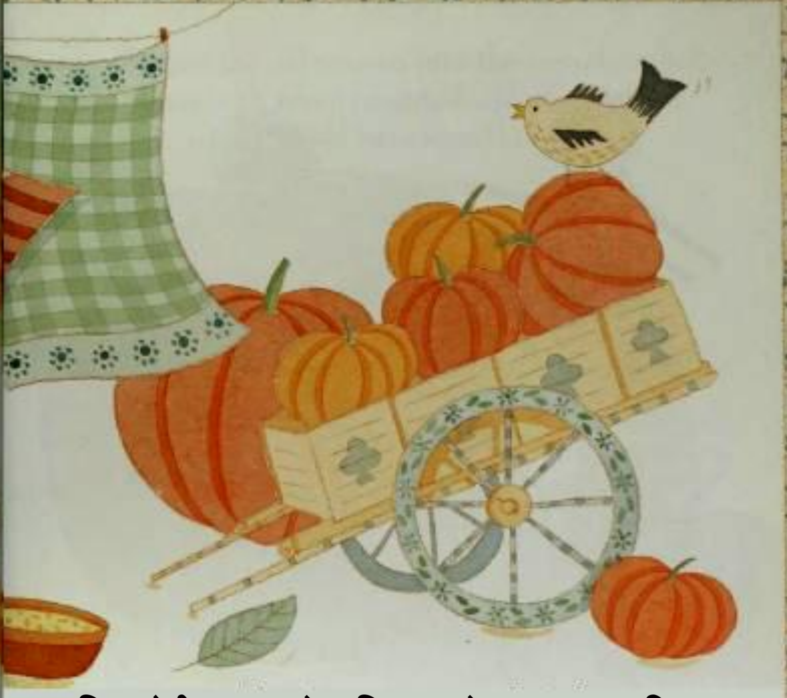

“प्रिय पोती, अब मुझे वापिस अपने घर जाना चाहिए,” बुढ़िया ने एक दिन कहा. “पर अब मैं इतनी मोटी हो गई हूँ कि मुझसे चला ही नहीं जाता है. अब मुझे किसी बैलगाड़ी में वापिस जाना होगा. जंगल में एक भालू, सियार और शेर मुझे खाने के लिए इंतज़ार कर रहे होंगे. मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूं?”

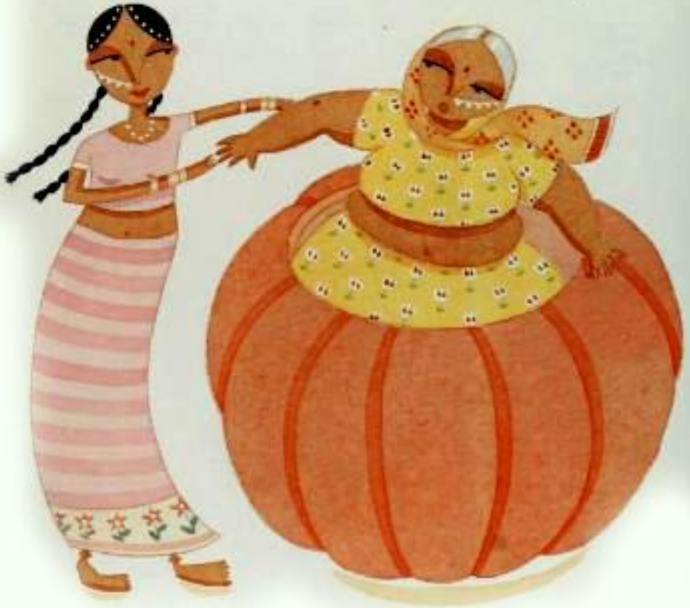

“दादी तुम बिल्कुल फ़िक्र मत करो,” बुढ़िया की पोती ने कहा. “मैं तुम्हें इस लाल कद्दू के खोल में छिपा दूँगी. फिर भालू, शेर और सियार को तुम्हारे बारे में कुछ पता ही नहीं चलेगा.”

फिर पोती ने दादी को लाल कद्दू के खोल में रखा. उसने दादी के खाने के लिए कुछ इमली, आलूबुखारे और भात भी रखा.

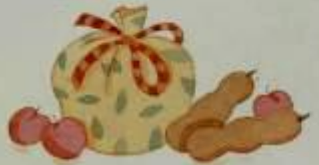

फिर पोती ने लाल कद्दू को धक्का दिया. उससे कद्दू सड़क पर तेज़ी से लुढ़कने लगा.

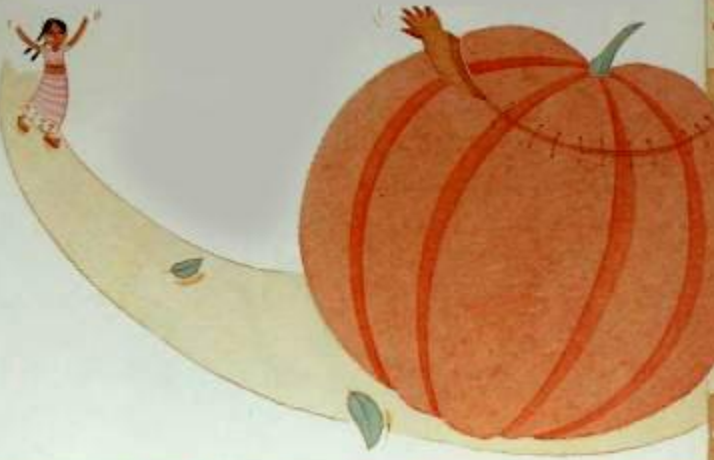

फिर कद्दू लुढ़कता रहा
और आगे बढ़ता रहा.
और उसके अन्दर बैठी
बुढ़िया गाना गाती रही.

“कद्दू-कद्दू मेरे मीत
इमली-भात खाते-पीते
दिन जाता है बीत
आओ सुनो मेरे गीत!”

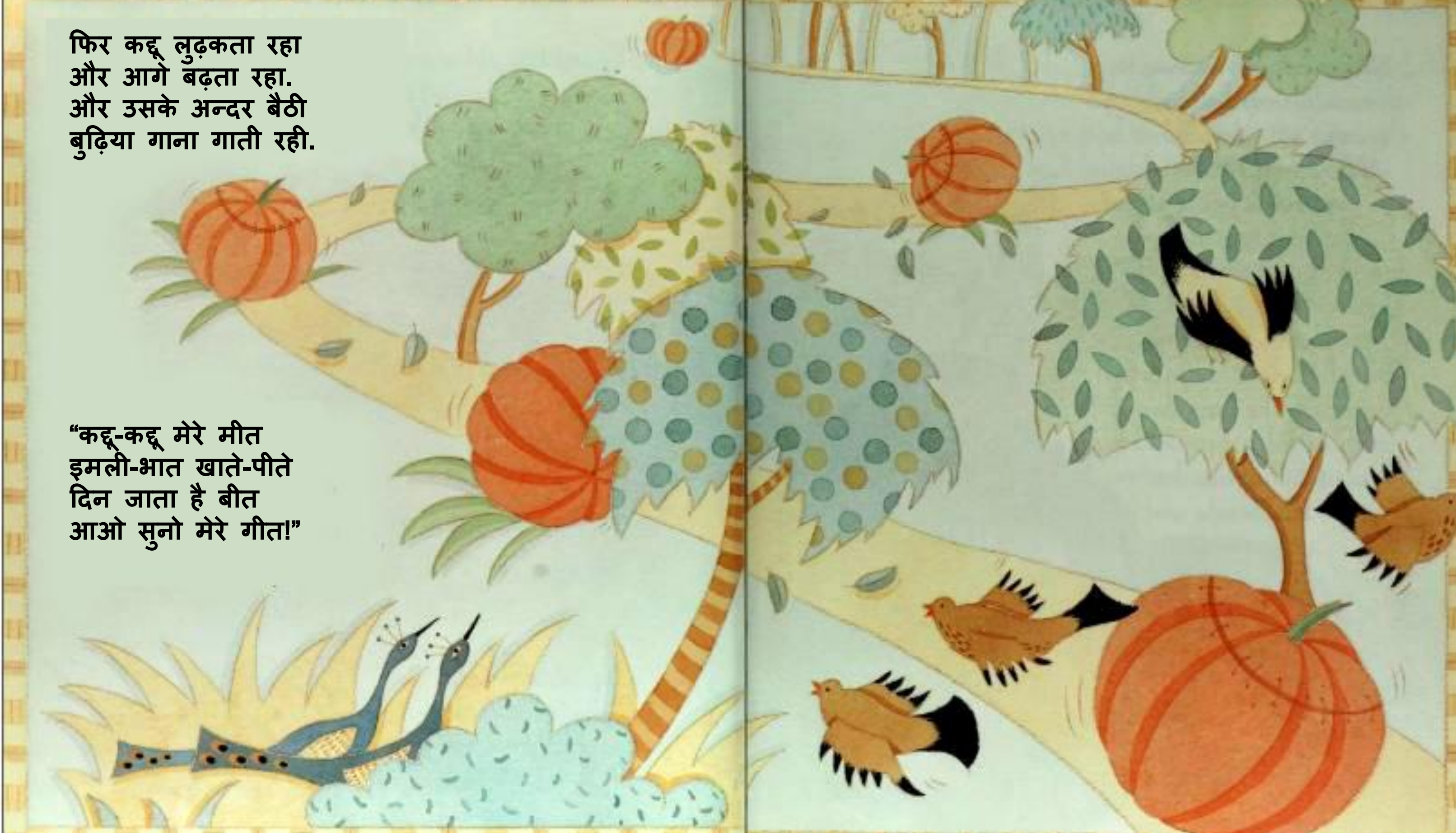

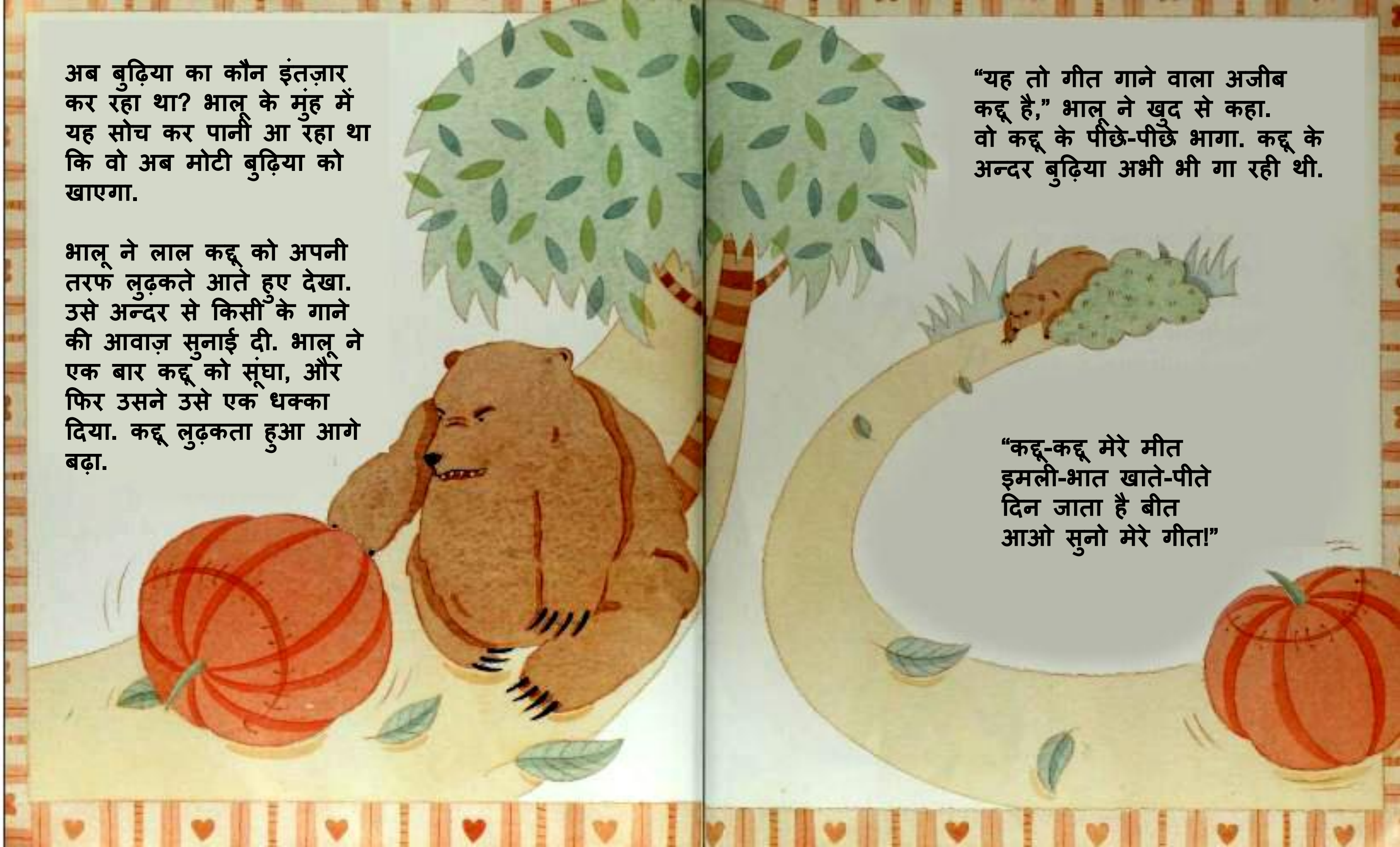

अब बुढ़िया का कौन इंतज़ार कर रहा था? भालू के मुंह में यह सोच कर पानी आ रहा था कि वो अब मोटी बुढ़िया को खाएगा.

भालू ने लाल कद्दू को अपनी तरफ लुढ़कते आते हुए देखा. उसे अन्दर से किसी के गाने की आवाज़ सुनाई दी. भालू ने एक बार कद्दू को सूंघा, और फिर उसने उसे एक धक्का दिया. कद्दू लुढ़कता हुआ आगे बढ़ा.

“यह तो गीत गाने वाला अजीब कद्दू है,” भालू ने खुद से कहा. वो कद्दू के पीछे-पीछे भागा. कद्दू के अन्दर बुढ़िया अभी भी गा रही थी.

“कद्दू-कद्दू मेरे मीत
इमली-भात खाते-पीते
दिन जाता है बीत
आओ सुनो मेरे गीत!”

कुछ दूर आगे जाने के बाद सड़क के बीच में शेर इंतज़ार कर रहा था. शेर के मुंह में यह सोचकर पानी आ रहा था कि वो अब मोटी बुढ़िया को खाएगा.

शेर ने लाल कद्दू को अपनी तरफ लुढ़कते आते हुए देखा. अन्दर से उसे किसी के गाने की आवाज़ सुनाई दी. शेर कद्दू को देखकर एक बार दहाड़ा. फिर उसने उसे एक धक्का दिया. कद्दू लुढ़कता हुआ आगे बढ़ा और भालू उसके पीछे-पीछे दौड़ा.

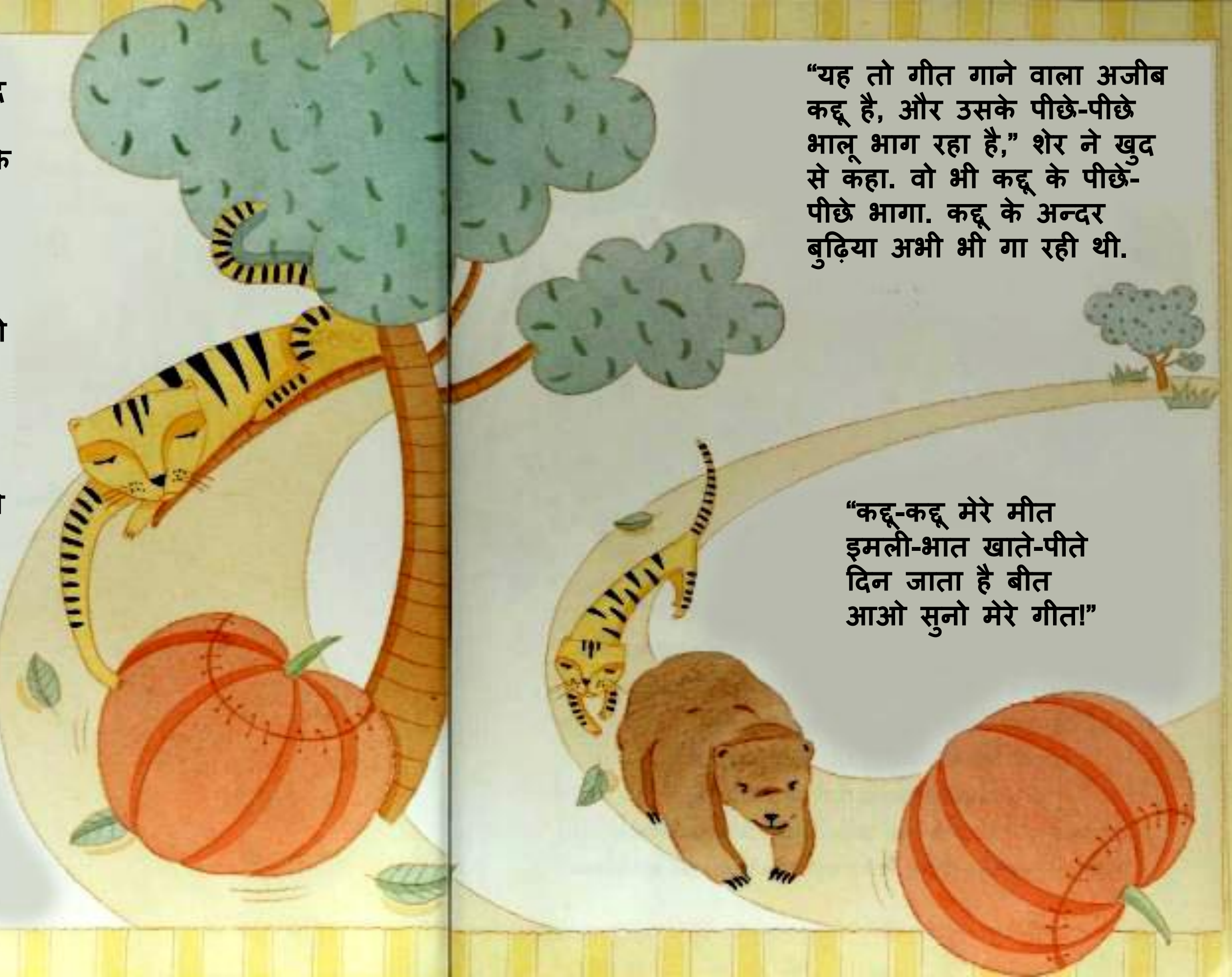

“यह तो गीत गाने वाला अजीब कद्दू है, और उसके पीछे-पीछे भालू भाग रहा है,” शेर ने खुद से कहा. वो भी कद्दू के पीछे-पीछे भागा. कद्दू के अन्दर बुढ़िया अभी भी गा रही थी.

“कद्दू-कद्दू मेरे मीत
इमली-भात खाते-पीते
दिन जाता है बीत
आओ सुनो मेरे गीत!”

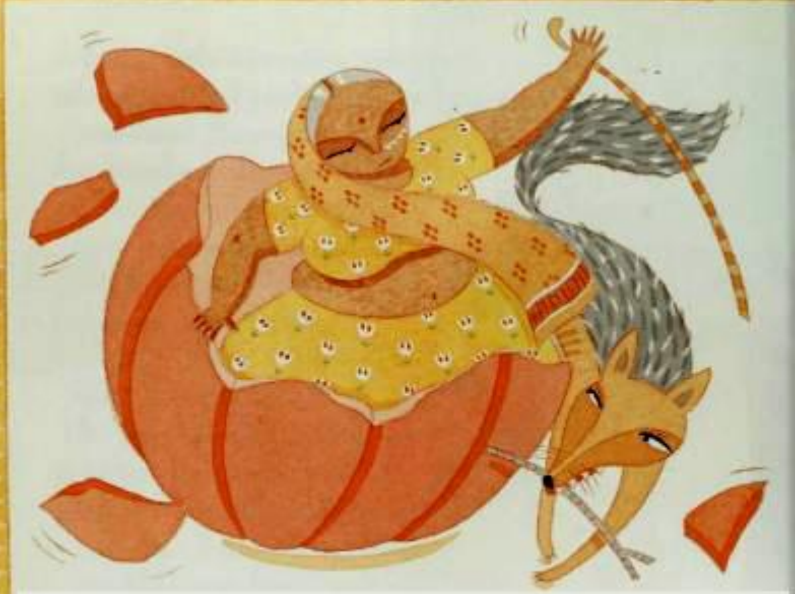

कुछ दूर आगे जाने के बाद सड़क के बीच में सियार इंतज़ार कर रहा था. सियार के मुंह में यह सोचकर पानी आ रहा था कि वो अब मोटी बुढ़िया को खाएगा. सियार ने लाल कद्दू को अपनी तरफ लुढ़कते आते हुए देखा. अन्दर से उसे किसी के गाने की आवाज़ सुनाई दी तो सियार आश्चर्य से कूदा.
“अरे यह कद्दू कैसे गा रहा है?” वो चिल्लाया.
सियार ने एक डंडे से मारकर कद्दू को तोड़ डाला.
फिर उसमें से बुढ़िया बाहर निकली.

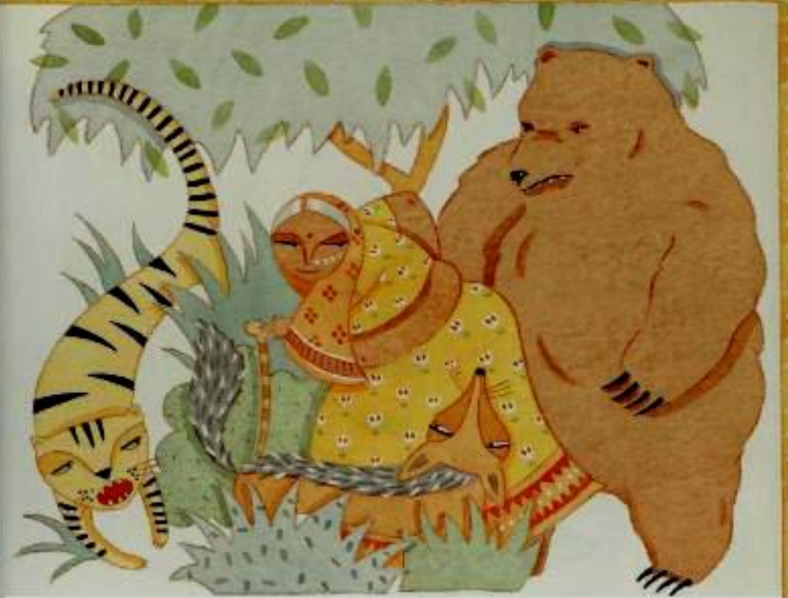

“बूढ़ी औरत अब मैं तुम्हें खाऊंगा,” सियार ने कहा.
इतनी देर में भालू वहां पर दौड़ा-दौड़ा आ पहुंचा.
“बूढ़ी औरत अब मैं तुम्हें खाऊंगा,” भालू ने कहा.
तभी शेर भी वहां पर दौड़ा-दौड़ा आ पहुंचा.
“बूढ़ी औरत अब मैं तुम्हें खाऊंगा,” शेर ने कहा.
“ठीक है! तुम मुझे खाओ,” बूढ़ी औरत ने कहा,
“पर तुम मे से सबसे ताकतवर को ही मेरा सिर मिलेगा.”

“मैं सबसे ताकतवर हूँ!” भालू ने कहा.

“नहीं, मैं सबसे ताकतवर हूँ!” शेर ने कहकर भालू का गिरेबान पकड़ा.

“नहीं, मैं सबसे ताकतवर हूँ!” सियार ने कहा और फिर उसने शेर की पूँछ को काटा.

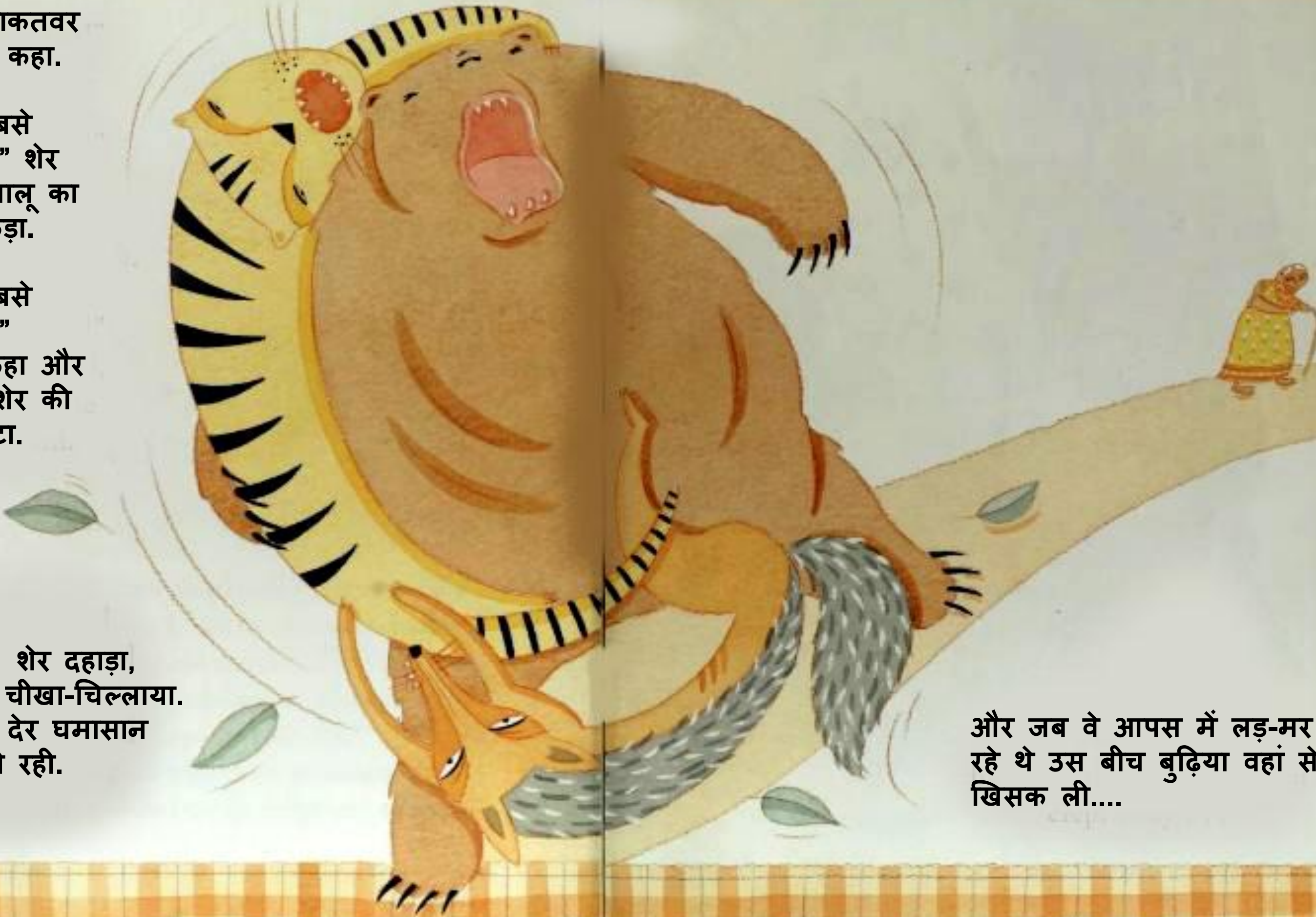

भालू घुर्राया, शेर दहाड़ा, और सियार चीखा-चिल्लाया. उनमें काफी देर घमासान लड़ाई चलती रही.

और जब वे आपस में लड़-मर रहे थे उस बीच बुढ़िया वहां से खिसक ली....

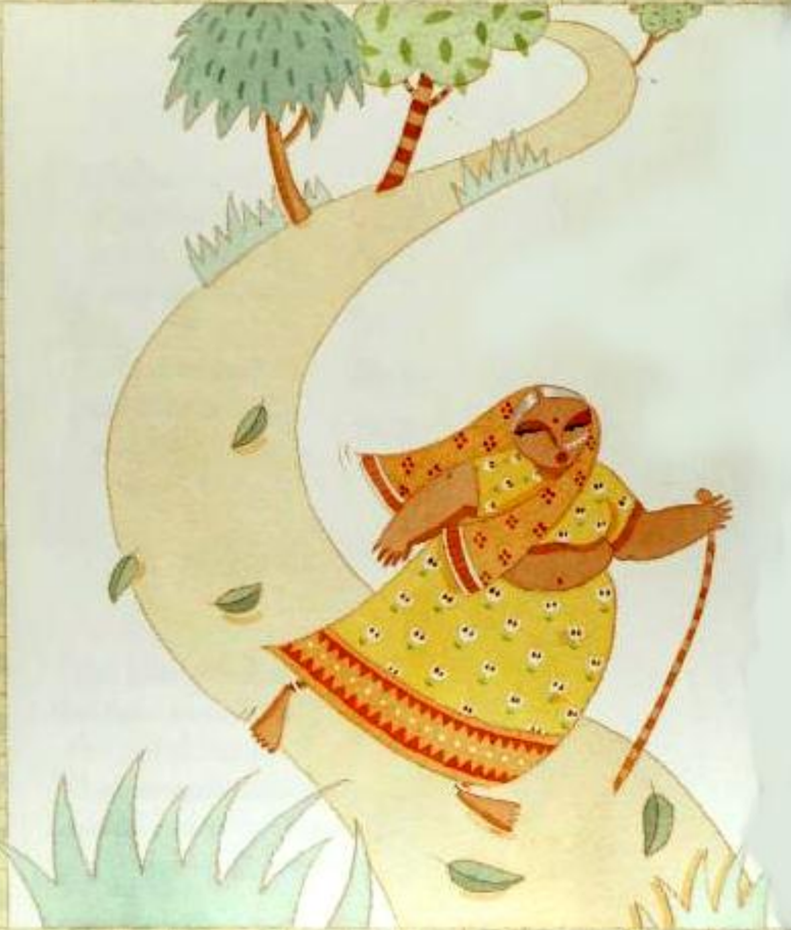

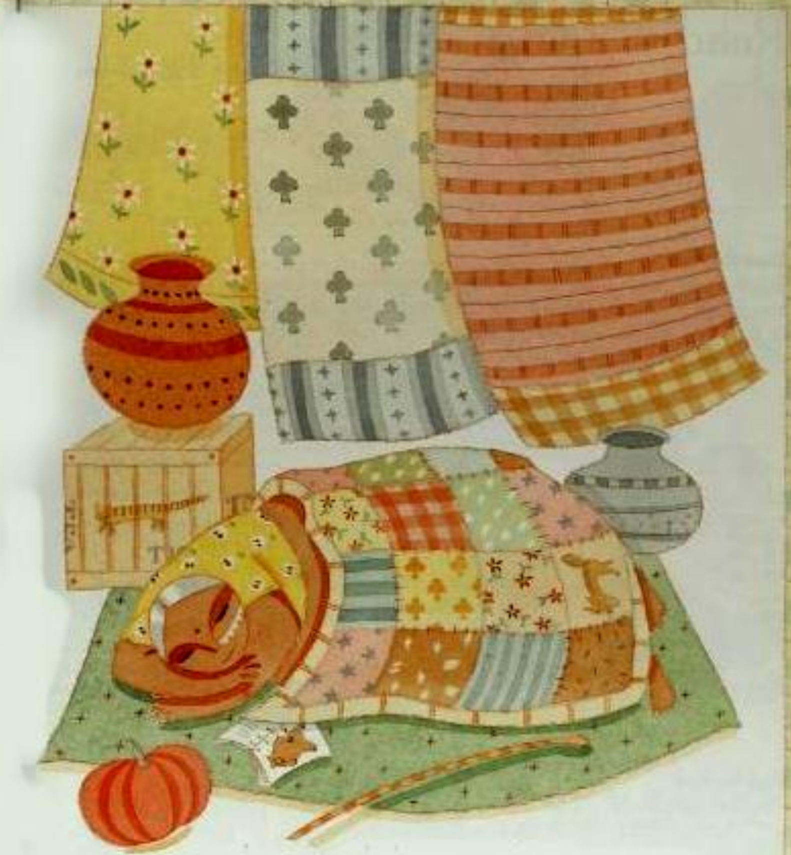

... वो दौड़ी और सीधे अपने घर पहुंची.

अंत